

अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

राष्ट्र की उन्नति अनेक घटकों पर निर्भर करती है। इन घटकों में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी कारण शिक्षा उद्देशपरक और उपयोगी होना आवश्यक होता है। तथा समयानुसार उसमें परिवर्तन आवश्यक होता है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे भाषा संबंधी खासकर मातृभाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी उपलब्धि को प्राप्त करने पर विशेष बल दिया है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है। मातृभाषा के साथ-साथ इस भाषा का ज्ञान जरूरी है। यही कारण है कि समूचे भारत में अध्ययन-अध्यापन में इसका समावेश किया गया है। फिर भी हिन्दी भाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के संदर्भ में बच्चों को ज्यादा कठिनाई होती है। जितनी सरलता से अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं उतनी सरलता से हिन्दी भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते।

प्रस्तुत शोधकार्य के अंतर्गत पठन और लेखन कौशल को ध्यान में रखकर कार्य किया गया। विद्यार्थियों में लेखन और पठन कौशल का विकास करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व है। कक्षा में कुछ विद्यार्थियों को पठन एवं लेखन के दौरान कोई कठिनाई नहीं होती है। क्योंकि वे धारा प्रवाह में लिखने व पढ़ने में सक्षम होते हैं, किन्तु कुछ औसत दर्जे के होते हैं जिनमें शिक्षक के थोड़े प्रयास से उन्हें लेखन एवं पठन में दक्ष बनाया जा सकता है।

विद्यार्थियों में पठन व लेखन कौशल को विकसित करने एवं पठन-लेखन में होने वाली अशुद्धियों को जानने के लिए पठन व लेखन परीक्षण आवश्यक है। अतः इस दृष्टि से पठन व लेखन की अशुद्धियों के अध्ययन का महत्व अधिक बढ़ जाता है। प्राथमिक स्तर पर इन अशुद्धियों का निराकरण अति आवश्यक है।

5.1.0 परिणाम

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पनाओं के विश्लेषण, व्याख्या करने के बाद निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –

- कक्षा सात के शासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के पठन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं था।
- कक्षा सात के अशासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के पठन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं था।
- कक्षा सात के शासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के लेखन कौशल में सार्थक अंतर पाया गया।
- कक्षा सात के अशासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के लेखन कौशल में सार्थक अंतर पाया गया।

- कक्षा सात के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के पठन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं था।
- कक्षा सात के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं था।
- कक्षा सात के शासकीय-अशासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के पठन कौशल में सार्थक अंतर पाया गया।
- कक्षा सात के शासकीय-अशासकीय विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के लेखन कौशल में सार्थक अंतर पाया गया।

5.2.0 निष्कर्ष

संपूर्ण शोधकार्य के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

- विद्यार्थियों के पठन कौशल परीक्षण से यह पाया गया कि – वाचन का महावरा न होने के कारण तथा हिन्दी भाषा एवं शब्दों की ज्यादा पहचान न होने के कारण कई बच्चे पठन में कठिनाई का अनुभव करते हैं और वाचन में अशुद्धि कर बैठते हैं।
- विद्यार्थियों के लेखन कौशल परीक्षण से यह पाया गया कि – जल्दबाजी, लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव करते हैं और कई प्रकार की जैसे – मात्रात्मक, विराम चिह्नों की, बिन्दु की, संयुक्ताक्षर आदि की अशुद्धियाँ करते हैं।
- मातृभाषा का प्रभाव तथा विद्यार्थियों को हिन्दी का शुद्ध वर्तनी रूप व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने के कारण पठन व लेखन कौशल में अशुद्धियाँ हुई।
- अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में पठन तथा लेखन कौशल में ज्यादा कठिनाई हुई।
- छात्र तथा छात्राओं की तुलना में छात्रों को पठन एवं लेखन में ज्यादा मुश्किल हुई।

5.3.0 सुझाव

5.3.1 प्राथमिक शाला में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को सुझाव

- अध्ययन में आने वाली समस्या निःसंकोच शिक्षक को बताना चाहिए।
- शाला में दिया हुआ गृह कार्य नियमित रूप से करना चाहिए ताकि लेखन कौशल का विकास हो सकें।
- शाला में शिक्षक की गैरहाजरी में खाली समय में किसी अच्छे पाठ का वाचन क्रमशः करना चाहिए।
- भिन्न-भिन्न प्रकार की स्पर्धाओं में हिस्सा लेना चाहिए ताकि पठन व लेखन कौशल का विकास हो सकें।

5.3.2 प्राथमिक शाला के शिक्षकों को सुझाव

- शिक्षकों को हिन्दी भाषा पढ़ाते समय पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

- कक्षा में सस्वर वाचन कराना चाहिए।
- लेखन से संबंधित गृह कार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी की उत्तर पुस्तिका में वर्तनी की अशुद्धियों की जाँच करनी चाहिए तथा अंकों को शब्दों में लिखवाकर अभ्यास करवाना चाहिए।
- पाठ्य सामग्री को पढ़ने के लिए समुचित समय दिया जाना चाहिए।
- ऐसे क्रियाकलापों का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्र अपनी पठन संबंधी त्रुटियों को स्वयं दूर करने का प्रयास करें।
- उचित गति से पढ़ने का अभ्यास करवाना चाहिए।
- भाषा संबंधी खेलों का आयोजन किया जाये जैसे शब्द निर्माण का खेल, अंत्याक्षरी, समस्या समाधान आदि इससे विद्यार्थियों का शब्द भंडार विकसित होता है।
- कक्षा स्तर पर हिन्दी शुद्ध लेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- शिक्षकों को बच्चों की हिन्दी भाषा उपलब्धि हेतु बच्चों से हिन्दी में सम्प्रेषण करना चाहिए।

5.3.3 प्राथमिक शाला के छात्र-छात्राओं के पालक को सुझाव

- एक परिवार में बच्चे को माता-पिता के द्वारा ही भाषा की शिक्षा मिलती है। अतः बालकों में भाषा संबंधी कठिनाईयों को दूर करने के लिए माता-पिता का सहयोग आवश्यक है।
- घर में माता पिता द्वारा हिन्दी भाषा बालकों के साथ व्यवहार में लायी जानी चाहिए।
- माता-पिता द्वारा बच्चों को सुंदर लेखन की आदत डालनी चाहिए।
- पालक द्वारा बच्चों को समझाना चाहिए कि शिक्षा के माध्यम से प्रगति होती है।

5.3.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध विस्तृत न्यादर्श पर किया जाए, जिसमें परिकल्पनाओं का परीक्षण और अधिक स्पष्ट हो सके।
- प्रस्तुत शोध में पठन व लेखन कौशल को ही लिया गया है श्रवण व कथन कौशल मिलाकर चारों कौशल पर विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
- इस प्रकार के शोधकार्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं पर भी होने चाहिए।
- विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की कौशलों में कठिनाईयों का पता लगाकर शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करके अध्ययन करना चाहिए।
- प्रस्तुत शोध ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयीन विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
- इसी प्रकार का शोध कार्य अन्य भाषाओं में भी किया जाना चाहिए।

5.4.0 शैक्षिक उपयोग

- प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की तीव्रता होती है। अतः वह पठन एवं लेखन में रुचि लेते हैं। इसलिए इस स्तर पर पठन व लेखन पर ध्यान देना चाहिए।
- बच्चे भाषा की जटिल संरचना को सहज रूप में सीखते हैं इसलिए इस दृष्टि से उनका मूल्यांकन उनकी अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।
- भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसलिए विद्यार्थियों की भाषा में दक्षता का प्रभाव उनके अन्य विषयों पर भी पड़ता है। अतः भाषा के अध्यापन पर ही बालकों की सफलता निर्भर है।
- अशिक्षित परिवार के बालकों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इन परिवारों में भी प्रतिभाएँ जन्म लेती हैं। आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों में भी सृजन की अनेक संभावनाएँ हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में बालकों में लेखन व पठन कौशल के विकास हेतु सहृदयता एवं धैर्य व निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता है।
- अशिक्षित वातावरण व परिवेश वाले परिवारों में लेखन के महत्व का ज्ञान कम होने के कारण वह अपने बच्चों को लेखन के प्रति प्रेरित नहीं कर पाते। अतः इस स्थिति में शैक्षिक सन्तुलन के लिए बच्चों के माता-पिता को जानकारी देना चाहिए तथा इस प्रकार ध्यान देना चाहिए कि उन बालकों की प्रतिभा पर अशिक्षित वातावरण का प्रभाव कम से कम हो सकें क्योंकि ऐसे माता-पिता के बच्चे विद्यालय पर ही निर्भर होते हैं।
- लेखन एक ऐसा उपकरण का साधन है। जिससे सम्पूर्ण मानवता के बन्धुत्व के भाव विकसित किए जा सकते हैं। अतः भाषा शिक्षण में माता-पिता को बच्चे के लेखन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। अतः बालकों में पठन व लेखन कौशल का विकास अनिवार्य दायित्व माना जाना चाहिए।
